International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-1 Jan-Feb-2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

आधुनिक भारतीय धर्म सुधारकों में, विवेकानन्द ने पुरुषों और महिलाओं की समानता के लिए के विचार

डॉ० शहादत हुसैन (शोध निर्देशक), शिक्षा संकाय, सनराइस यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

सुमन (शोध छात्रा), शिक्षा संकाय, सनराइस यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

सार

हिंदू धर्म के आदर्श वक्ता स्वामी विवेकानन्द (1863–1902) विश्व स्तर पर हिंदू धर्म के आध्यात्मिक ज्ञान के लिए जाने जाते हैं। आधुनिक भारतीय धर्म सुधारकों में, विवेकानन्द ने पुरुषों और महिलाओं की समानता के लिए तर्क दिया। स्वामी विवेकानन्द पहले संन्यासी हैं जिन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता को कायम रखा और उनके लिए काम किया और समाज के साथ–साथ राष्ट्र के लिए भी महिलाओं के महत्व को समझा। उन्होंने पहचाना कि महिलाओं की अज्ञानता भारत की प्रगति में मुख्य बाधा थी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महिलाओं को अपनी समस्याओं को अपने तरीके से हल करने के लिए सत्ता की स्थिति में रखा जाना चाहिए और यह शिक्षा के बिना संभव नहीं हो सकता है। वे जीवन भर नारी शिक्षा के विकास के लिए लगे रहे। उनकी शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य निर्माण और चरित्र निर्माण है – ये सिद्धांत महिला शिक्षा के क्षेत्र में भी लागू होते हैं। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण व्यावहारिक वेदांत और पश्चिमी संस्कृति पर आधारित है। स्वामी जी ने अलग–अलग सामाजिक स्थिति को सोचकर महिलाओं के लिए अलग–अलग पाठ्यक्रम तैयार किये। उन्होंने यह भी कहा कि सामाजिक और जन शिक्षा के लिए मातृभाषा ही सर्वोत्तम माध्यम है। स्वतंत्र भारत में अभी भी महिलाएँ कई पुरानी समस्याओं जैसे शारीरिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि से पीड़ित हैं।

मुख्य शब्द: *समानता, महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण*

प्रस्तावना

यह तो सभी जानते हैं कि स्वामीजी न केवल एक सन्यासी, शिक्षक, महान नेता, रहस्यवादी, दार्शनिक थे बल्कि भारत के लिए अनवरत कर्मयोगी भी थे जिन्होंने विश्व में भारत को एक अद्वितीय संस्कृति, संस्कार और धार्मिक देश के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत को एक ऐसे देश के रूप में भी प्रस्तुत किया जो संभावित रूप से दिव्य है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार "शिक्षा मनुष्यों में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है" और यह न केवल जानकारी का संग्रह है, बल्कि कुछ अधिक सार्थक है; उनका मानना था कि शिक्षा मनुष्य निर्माण, जीवन देने वाली और चरित्र निर्माण करने वाली होनी चाहिए। उनके लिए शिक्षा महान विचारों को आत्मसात करना था। स्वामी जी ने भारत के विकास में मुख्य बाधा महिलाओं के प्रति उपेक्षा को पहचाना और महसूस किया। किसी भी देश का विकास और उन्नति मानव संसाधन पर निर्भर करती है। इसलिए यदि हम महिलाओं की उपेक्षा करते हैं तो समानांतर रूप से हम मानव संसाधन की भी उपेक्षा करते हैं और किसी भी समाज के साथ–साथ देश और दुनिया के विकास पर भी अंकुश लगाते हैं।

स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि किसी राष्ट्र की प्रगति का पैमाना वहां की महिलाओं के प्रति उसका व्यवहार है और जब तक भारतीय महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने का प्रयास नहीं करेंगे तब तक भारत का खोया हुआ गौरव और सम्मान वापस पाना असंभव है। वह स्त्री और पुरुष को एक पक्षी के दो पंख मानते थे और एक पक्षी के लिए केवल एक पंख पर उड़ना संभव नहीं है। इसलिए, उनके अनुसार, जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा तब तक दुनिया के कल्याण की कोई संभावना नहीं है। महिलाओं की शिक्षा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए भी आवश्यक है। लेकिन भारत में महिलाओं में अशिक्षा की मात्रा बहुत अधिक है। 2021 की जनगणना के अनुसार 35 प्रतिशत महिलाएँ अभी भी निरक्षर हैं। यह दर्शाता है कि भारत संभावित श्रमिकों का सही तरीके से उपयोग नहीं कर रहा है। महिलाओं की क्षमताओं और कौशल का या तो उपयोग नहीं हो रहा है या कम उपयोग हो रहा है। हालाँकि शिक्षा प्रणाली का बहुत तेजी से विस्तार हुआ, फिर भी पुरुष और महिला साक्षरता के बीच अंतर अभी भी बना हुआ है।

महिला शिक्षा के बारे में स्वामी विवेकानन्द के विचार

स्वामी विवेकानन्द ने चेतावनी दी कि लिंगों के बीच भेदभाव करना पूरी तरह से अनुचित है, क्योंकि "आत्मा" में कोई लिंग भेद नहीं है; आत्मा में न तो लिंग है, न जाति और न ही अपूर्णता। उन्होंने सुझाव दिया कि यह न सोचें कि पुरुष और महिलाएं हैं, बल्कि केवल यह सोचें कि इंसान हैं। महिला शिक्षा की शुरुआत करने के लिए उनका तर्क शुद्धता पर केंद्रित था क्योंकि यह हिंदू महिलाओं की विरासत है। जब हम अतीत में देखते हैं तो हमें महिलाओं की महिमा मिलती है – सीता, सावत्री, मैत्रयी, गार्गी – जिन्हें हम पवित्रता और पवित्रता की प्रकृति के रूप में जानते हैं। वैदिक युग में हमने पाया कि महिलाएँ एक उन्नत सामाजिक स्थिति की थीं। लेकिन मध्यकालीन युग की शुरुआत से लेकर औपनिवेशिक युग तक हमने पाया कि समाज में महिलाओं का वर्चस्व और शोषण होता रहा है।

स्वामी जी से पहले राजा राम मोहन, विद्यासागर भी महिलाओं की सेवा में लगे हुए थे। उन्होंने पतिव्रता पत्नी को उसके पति के अंतिम संस्कार में जलाना, बाल विवाह और बहुविवाह आदि को समाप्त कर दिया। लेकिन स्वामीजी अलग ध्रुव के व्यक्ति थे। महिलाओं की शिक्षा की उनकी योजना का मुख्य उद्देश्य उन्हें मजबूत, निडर और उनकी दानशीलता और गरिमा के प्रति जागरूक बनाना था। महिलाओं को ऐसी स्थिति में रखा जाना चाहिए, ताकि वे अपनी समस्याओं को अपने तरीके से हल कर सकें।

स्वामी विवेकानन्द ने महिलाओं के हाशिए पर जाने की वकालत की। उन्होंने 1895 में इंग्लैंड का दौरा किया और मार्गरेट एलिजाबेथ कुलीन और आयरिश महिला से मुलाकात की, जो बुद्ध के बारे में सीख रही थीं। स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं से प्रभावित होकर वह बगिनी निवेदिता नामक सन्यासिनी बनने वाली पहली पश्चिमी महिला बनीं। स्वामीजी के निर्देशानुसार नवंबर 1989 में निवेदिता ने ग्रामीण भारत में महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका निभाई; उन्होंने लड़कियों की बुनियादी शिक्षा के लिए एक स्कूल शुरू किया। यह स्कूल आज उत्तरी कोलकाता के बागबाजार में स्थित "रामकृष्ण सारदा मिशन सिस्टर निवेदिता गर्ल्स स्कूल" के नाम से जाना जाता है।

पढ़ाने का तरीका

विवेकानन्द के अनुसार ज्ञान प्रत्येक मनुष्य की आत्मा में निहित है। जब हम कहते हैं कि एक आदमी "जानता है" तो उसका तात्पर्य केवल वही है जो वह अपनी आत्मा से पर्दा हटाकर "खोजता" है। परिणामस्वरूप, वह इस तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं कि शिक्षक का कार्य केवल बच्चे के रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करके उसके ज्ञान को प्रकट करने में मदद करना है। उनके शब्दों में: २इस प्रकार वेदांत कहता है कि मनुष्य के भीतर ही सारा ज्ञान है, यहां तक कि एक लड़के में भी ऐसा होता है और इसके लिए केवल जागृति की आवश्यकता होती है और इतना ही शिक्षक का काम है।'' विवेकानन्द की शिक्षा पद्धति अनुमानवादी पद्धति से मिलती जुलती है। आधुनिक शिक्षाशास्त्री. इस प्रणाली में, शिक्षक विद्यार्थी में जांच की भावना जगाता है, जिससे अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षक के पूर्वाग्रह–मुक्त मार्गदर्शन के तहत स्वयं चीजों का पता लगाए। (सरवणकुमार.एआर., 2005) वह पर्यावरण पर बहुत अधिक जोर देता है। बच्चे के समुचित विकास के लिए घर और स्कूल। माता–पिता के साथ–साथ शिक्षकों को भी बच्चों को अपने जीवन जीने के तरीके से प्रेरित करना चाहिए। स्वामीजी इस उद्देश्य के लिए गुरुकुल की पुरानी संस्था और इसी तरह की प्रणालियों की सिफारिश करते हैं। ऐसी प्रणालियों में, छात्रों के सामने शिक्षक का आदर्श चरित्र लगातार बना रह सकता है, जो अनुसरण करने के लिए आदर्श के रूप में कार्य करता है।

महिलाओं

स्वामी विवेकानन्द के संपूर्ण कार्यों की खोज से कुछ समृद्ध सामग्री का पता चलता है जिसे बार–बार देखा जाना चाहिए और उस पर विचार किया जाना चाहिए। शुरुआत में, स्वामी विवेकानन्द के अपने शब्दों में एक अस्वीकरण दिया जाना चाहिए "किसी भी राष्ट्र की मलिन बस्तियों का उत्पाद राष्ट्र के बारे में हमारे निर्णय की कसौटी नहीं हो सकता। कोई दुनिया के हर सेब के पेड़ के नीचे सड़े हुए, कीड़ों से खाए हुए सेबों को इकट्ठा कर सकता है, और उनमें से प्रत्येक के बारे में एक किताब लिख सकता है, और फिर भी सेब के पेड़ की सुंदरता और संभावनाओं के बारे में कुछ भी नहीं जानता है। केवल उच्चतम और सर्वश्रेष्ठ से ही हम किसी राष्ट्र का मूल्यांकन कर सकते हैं – पतित अपने आप में एक जाति हैं।

इस प्रकार किसी प्रथा को उसके सर्वोत्तम, उसके आदर्श के आधार पर आंकना न केवल उचित है, बल्कि उचित भी है।''

इसके अलावा, उन्होंने कहा था कि "तो मैं आपके सामने आदर्श रखने की कोशिश करूँगा। प्रत्येक राष्ट्र में, पुरुष या महिला सचेतन या अचेतन रूप से कार्यान्वित एक आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं। व्यक्ति किसी आदर्श को मूर्त रूप देने की बाह्य अभिव्यक्ति है।

ऐसे व्यक्तियों का समूह ही राष्ट्र है, जो एक महान आदर्श का भी प्रतिनिधित्व करता है; उसी की ओर वह बढ़ रहा है। और, इसलिए, यह उचित रूप से माना जाता है कि किसी राष्ट्र को समझने के लिए आपको पहले उसके आदर्श को समझना होगा, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र अपने स्वयं के अलावा किसी अन्य मानक द्वारा आंके जाने से इनकार करता है।)

उद्देश्य

1. लैंगिक समानता पर स्वामी विवेकानन्द के विचार
2. महिलाओं की स्वतंत्रता पर स्वामी विवेकानन्द के विचार

अनुसंधान क्रियाविधिः

यह पेपर पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। द्वितीयक डेटा विभिन्न वेब स्रोतों और पुस्तकों से एकत्र किया जाता है।

वर्तमान समय में महिला शिक्षाः

महिलाओं की शिक्षा उन्हें अपने विवेकपूर्ण विकल्प चुनने के लिए अपना स्वयं का ज्ञान और जानकारी निर्धारित करने में सक्षम बनाती है। महिलाओं में साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में कम बनी हुई है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के पास उपलब्ध 2004–2005 के आंकड़ों के अनुसार, ग्रामीण महिलाओं में प्रति 1000 पर साक्षरता दर लगभग 450 है और शहरी महिलाओं में लगभग 700 है। यदि हम समग्र स्थिति देखें, तो सकारात्मक विकास हुआ है और महिला साक्षरता दर में कमी आई है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण 1997 की रिपोर्ट के अनुसार 50% तक वृद्धि। इस प्रगति के बावजूद, 245 मिलियन से अधिक भारतीय महिलाएँ पढ़–लिख नहीं सकतीं। 65.5% पुरुषों की तुलना में केवल 50% भारतीय महिलाएँ साक्षर हैं। लड़कों की तुलना में बहुत कम लड़कियाँ स्कूल जाती हैं। नामांकित होने के बावजूद भी कई छात्राएं स्कूल छोड़ देती हैं। मलेशिया, श्रीलंका, चीन और इंडोनेशिया में महिला वयस्क साक्षरता दर 70% से अधिक और भारत की तुलना में अधिक है। हाल ही में 13 नवंबर, 2008 को द टेलीग्राफ में पी.टी.आई. के आधार पर यह खबर छपी थी। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2008 में कहा गया है कि "भारत उन 20 देशों में से है जहां लिंग अंतर सबसे ज्यादा है।" यह 130 देशों में 113वां स्थान रखता है। भारत राजनीतिक सशक्तिकरण में 25वें, शैक्षिक उपलब्धि में 116वें और स्वास्थ्य देखभाल में 128वें स्थान पर है। आर्थिक भागीदारी और अवसर में भारत 125वें स्थान पर है।"

भारत में महिला शिक्षा की स्थिति

भारत में शिक्षा व्यवस्था का तेजी से विस्तार हुआ है। लेकिन अभी भी बड़ी संख्या में महिलाएं अंधेरे में हैं और साक्षरता दर में लैंगिक अंतर इसकी उपस्थिति से चौंकाने वाला बना हुआ है। निम्नलिखित तथ्य और आंकड़े समस्या की गंभीरता पर प्रकाश डालते हैं जो एक कठोर वास्तविकता है और यह दर्शाता है कि हमारे सामने एक कठिन कार्य है।

भारत में साक्षरता दर (2015–2021)

वर्ष लिंग	व्यक्तियों	पुरुषों	महिलाओं	साक्षरता दर में अंतर

2015	**18.33**	**27.16**	**8.86**	**18.30**
2016	**28.30**	**40.46**	**15.35**	**25.05**
2017	**34.45**	**45.96**	**21.97**	**23.98**
2018	**43.57**	**56.38**	**29.76**	**26.62**
2019	**52.21**	**64.13**	**39.29**	**24.84**
2020	**64.84**	**75.26**	**53.67**	**21.59**
2021	**74.04**	**82.14**	**65.46**	**16.68**

शिक्षा और इसकी वर्तमान प्रासंगिकता पर स्वामीजी का दृष्टिकोण

1999 की मूल्य आधारित शिक्षा समिति की 81वीं रिपोर्ट में सत्य, धार्मिक आचरण, शांति, प्रेम और अहिंसा के सिद्धांतों को शामिल करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया, जो स्वामीजी द्वारा प्रचारित धार्मिक मूल्य हैं।

21वीं सदी के विकास एजेंडे में भी उन्हीं कारणों से शिक्षा को महिला सशक्तीकरण की कुंजी के रूप में स्वीकार किया गया जैसा स्वामीजी ने 19वीं सदी में सोचा था। सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों की परिकल्पना है कि महिलाओं की शिक्षा उनकी उत्पादकता बढ़ाती है, उत्पादन बढ़ाती है और गरीबी कम करती है। यह घरों में लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है और महिलाओं के निर्णय लेने की बाधाओं को दूर करता है, जिसे 19वीं शताब्दी में स्वामी विवेकानन्द ने समान रूप से उद्धृत किया था।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही कहा था कि जब तक भारतीय महिलाएँ इस देश में सम्मानजनक स्थान सुरक्षित नहीं कर लेतीं, राष्ट्र कभी आगे नहीं बढ़ सकता। स्वामी ने कहा, किसी राष्ट्र की प्रगति महिलाओं के प्रति उसके व्यवहार पर निर्भर करती है। इसलिए, उनके अनुसार, जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा तब तक दुनिया के कल्याण की कोई संभावना नहीं है। यह भारत सरकार के साथ–साथ समग्र समाज की सबसे प्रमुख चिंताओं में से एक है। महिला शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द का दृष्टिकोण और साक्षरता दर में लैंगिक अंतर को खत्म करने का आज का मिशन दोनों एक ही लक्ष्य का संकेत देते हैं... प्रगति... महिलाओं की प्रगति और इस प्रकार पूरे देश की प्रगति। रास्ते अनेक, लक्ष्य एक" ।

संदर्भ

1. पी. निथिया (2012), 'शिक्षा के दर्शन पर स्वामी विवेकानन्द के विचार', एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च, खंड 1 अंक 6, नवंबर 2012, आईएसएसएन 2278–4853

2. मजूमदार, वीना (2002), 'भारत में महिला अध्ययन का विकास। शोधकर्ताओं के साथ संवादः नीति और अनुसंधान को जोड़ना–महिला अध्ययन पर एक परामर्श'। नई दिल्लीः महिला विकास अध्ययन केंद्र

3. सैय्यद, एम.एच. (2021). स्वामी विवेकानंद। हिमालय बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई।

4. अरोड़ा, वी.के. (1968) वोवेकानंद का सामाजिक और राजनीतिक दर्शन.प्रथम संस्करण।

5. आदिश्वरानंद, स्वामी, एड. (2006), विवेकानन्द, विश्व शिक्षकः मानव जाति की आध्यात्मिक एकता पर उनकी शिक्षाएँ, वुडस्टॉक, वर्मोंटः स्काईलाइट पाथ्स पब, आईएसबीएन 1–59473–210–8

6. भारती, के.एस. (1998), प्रख्यात विचारकों का विश्वकोशः विवेकानन्द का राजनीतिक विचार, नई दिल्लीः कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, आईएसबीएन 978–81–7022–709–0

7. चट्टोपाध्याय, राजगोपाल (1999), भारत में स्वामी विवेकानन्दः एक सुधारात्मक जीवनी, मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशन, आईएसबीएन 978–81–208–1586–5

8. गुप्ता, एन.एल. (2003), स्वामी विवेकानन्द, दिल्लीः अनमोल प्रकाशन, आईएसबीएन 978–81–261–1538–9

9. कश्यप, शिवेंद्र (2012), सेविंग ह्यूमेनिटीः स्वामी विवेकानन्द पर्सपेक्टिव, विवेकानन्द स्वाध्याय मंडल, आईएसबीएन 978–81– 923019–0–7

10. मजूमदार, रमेश चंद्र (1963), स्वामी विवेकानन्द शताब्दी स्मारक खंड, कोलकाताः स्वामी विवेकानन्द शताब्दी, पृ. 577, एएसआईएन B0007J2FTS

11. मुखर्जी, मणिशंकर (2021), द मॉन्क ऐज़ मैनः द अननोन लाइफ़ ऑफ़ स्वामी विवेकानन्द, आईएसबीएन 978–0–14– 310119–2

12. रोलैंड, रोमैन (1929), "नरेन द बिलव्ड डिसिप्लिन", द लाइफ ऑफ रामकृष्ण, हॉलीवुड, कैलिफोर्नियाः वेदांत प्रेस, पीपी. 169–193, आईएसबीएन 978–81–85301–44–0

13. सरवनकुमार.एआर., (2005), अलगप्पा यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ एजुकेशन द्वारा फरवरी, कराईकुडी में "शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता में वृद्धि" पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया।

14. सरवनकुमार.एआर., (2016), स्वामी विवेकानन्द पर मैन मेकिंग एजुकेशन नेशनल कॉन्फ्रेंसः ए यूथ आइकॉन (एसवीवाईआई–2016), स्वामी विवेकानन्द सेंटर फॉर हायर रिसर्च एंड एजुकेशन, अलगप्पा यूनिवर्सिटी कराईकुडी।

15. सरवनकुमार.एआर., (2017), भौतिक विभाग द्वारा आयोजित माइंडफुलनेस पर फोकसः तंत्रिका विज्ञान शिक्षा की झलक –2017 (आईसीएफएमः जीएनएसई – 2017) पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में

"समसामयिक शिक्षा में दिमागीपन – एक अवलोकन" शीर्षक से पेपर प्रस्तुत किया गया। 7 और 8 दिसंबर 2017 को शिक्षा और स्वास्थ्य विज्ञान, अलगप्पा विश्वविद्यालय, कराईकुडी।